साम्ययोग का रेखाचित्र

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

का

रेखाचित्र

विमला

साम्यवाद और साम्ययोग
(सर्वोदय) के तत्त्वों के मूल-
गामी तुलनात्मक २४ सूत्र

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

प्रकाशक :
अ० वा० सहस्रबुद्धे,
मंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन,
राजघाट, काशी

पहली बार : १०,०००
मूल्य : दो आना
जुलाई १९५५

मुद्रक :
ओम् प्रकाश कपूर,
ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, बनारस. ४७७२–१२

प्र स्ता व ना

विज्ञान के विकास से मानव-समाज दैन्य, दारिद्र्य तथा भूख से रिहाई पा सकेगा, अकाल मृत्यु और व्याधि के अभिशाप से मुक्त हो सकेगा—यह श्रद्धा आधुनिक मानव-समाज में दो सदियों से जीवन-साधना का आधार रही है।

न्याय तथा समता के सहारे समाज का नव-निर्माण हो सका तो मानव आर्थिक शोषण से मुक्त हो जायगा; धर्म के नाम पर सदियों से चलनेवाली अंध रूढ़ियों का दौर खत्म हो जायगा। मनुष्यता का विकास समाज-प्रणाली की सहायता से संपन्न होगा। आधुनिक युग के क्रान्तिकारी तपस्वियों में यह श्रद्धा जीवन का स्थायी आधार रही है।

अणु-विस्फोट-युद्ध में इन दोनों श्रद्धाओं की आहुति पड़ेगी। यह भयानक भवितव्यता क्रियाशील मानव को बेचैन कर रही है।

विद्वेष की प्रेरणा मानव-समाज को सीधे अणु-युद्ध की श्मशान-भूमि तक पहुँचा देगी! क्या विज्ञान मानव के हृदय में रहनेवाली परस्पर विद्वेष की अग्नि बुझा सकेगा?

क्या साम्यवाद, विना विश्व-संघर्ष के, कोई विकास-मार्ग ढूँढ लेगा?

किसी भी मुल्क में रहनेवाला विवेकशील मानव आज इसी समस्या पर चिन्तन—मनन—अन्वेषण कर रहा है। आशा है, इस दिशा में दौड़ने-वाली दूरदृष्टि के लिए यह पुस्तिका एक प्रकाश-किरण बनेगी।

राजघाट, काशी
२० जून, १९५५

—अच्युत पटवर्धन

अपनी बात

कार्ल मार्क्स ने जब से यूरोप में क्रांतिकारी अर्थशास्त्र का प्रतिपादन किया, तब से सारे संसार में एक नये युग का आरम्भ हुआ। आज का युग मार्क्स का है या गांधी का है, इस विवाद में पड़ने का मोह अक्सर होता है। लेकिन वस्तु-स्थिति यह है कि मार्क्स के बाद गांधीजी का आविर्भाव हुआ। इसलिए यह कहना ग़लत है कि आज का ज़माना सिर्फ गांधीजी का ही है और मार्क्स का नहीं है। मार्क्स की विचार-प्रणाली और मार्क्सवादियों के पुरुषार्थ से संसार में जो विलक्षण परिवर्तन हुआ है, उसकी भूमिका से गांधीजी के विचार और कार्य को लाभ ही हुआ है। अतः यहाँ पर साम्यवाद और साम्ययोग या सर्वोदय का तुलनात्मक विचार विधायक दृष्टि से करने का प्रयत्न है।

—विमला

साम्ययोग
का
रेखाचित्र

सा म्य वा द

१. सापेक्ष मूल्य

मनुष्य अपने में न तो अच्छा है, न बुरा है। परिस्थिति उसको भला-बुरा बनाती है।

२. वस्तु परिवर्तन

परिस्थिति में बलपूर्वक ऐसा परिवर्तन करें कि जिससे दोष पैदा होने के लिए समाज में अवसर न रहे।

३. शासन और नियन्त्रण

बाहरी नियन्त्रण और शासन से मनुष्य का स्वभाव वांछित दिशा में मोड़ने का प्रयत्न।

४. मानव : उपकरण मात्र

क्रांति की प्रक्रिया में व्यक्ति के नाते मनुष्य का महत्त्व नहीं है। नागरिक के स्वयंकर्तृत्व के लिए अवसर नहीं है। वह केवल साधनमात्र बन जाता है।

सा म्य यो ग

१. निरपेक्ष मूल्य

मनुष्य स्वभावतः सत्प्रवृत्त है। उसमें जो दोष पैदा होते हैं, वे परिस्थितिजन्य, संस्कारजन्य या विकारजन्य होते हैं।

२. आत्म-संयम

नये संस्कारों का निर्माण तथा परिस्थिति में इस प्रकार का परिवर्तन, जिससे दोषों का निराकरण हो और मनुष्य की मूलभूत सत्प्रवृत्ति को प्रकट होने के लिए अवसर मिले।

३. हृदय-परिवर्तन

बाह्य परिवर्तन व्यक्ति के सहयोग से करने का प्रयत्न। अतः हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया का अवलम्बन। व्यक्ति की आंतर-अभिव्यक्ति के लिए बाह्य परिवर्तन से अनुकूलता का निर्माण।

४. मानव : परममूल्य

यहाँ मनुष्य ही परममूल्य है। उसके विकास के लिए सारी योजना और व्यवस्था है। उसकी स्वयंप्रेरणा और स्वयंकर्तृत्व के लिए क्रांति की प्रक्रिया पोषक होनी चाहिए।

सा म्य वा द

५. शासन का दृढ़ीकरण

समाज-परिवर्तन सत्ता के द्वारा करने का आग्रह। इसलिए राज्यसंस्था सर्वंकष बन जाती है। शासन-मुक्त समाज की तरफ़ कदम बढ़ाने के लिए यह प्रक्रिया अनुकूल नहीं है।

६. हिंसा की अप्रत्यक्ष प्रेरणा

साम्यवाद अन्तिम और निरपेक्ष मूल्यों जैसा कोई तत्त्व नहीं मानता। वह हिंसा का पक्षपाती भले ही न हो; परन्तु, जबकि उसमें किसी शाश्वत मूल्य के लिए आग्रह नहीं है, तो मनुष्य को अहिंसा-पराङ्मुख बनने के लिए अप्रत्यक्ष प्रेरणा है। सापेक्ष मूल्यवाद का यह स्वाभाविक परिणाम है।

७. ग़रीबी और अमीरी देवनिर्मित या दैवनिर्मित नहीं है; और न वह अनिवार्य ही है। आर्थिक विषमता मानव-कृत है।

८. व्यक्तिगत संग्रहलोलुपता और आर्थिक प्रभुत्व की आकांक्षा से आर्थिक विषमता पैदा होती है।

९. इस विषमता का निराकरण ऐतिहासिक क्रमविकास का एक आवश्यक अंग है। वह अवश्यम्भावी है और वांछनीय है।

सा म्य यो ग

५. शासनमुक्ति की साधना

यहाँ व्यक्ति के विकास का अभिप्राय मुख्य है। इसलिए नागरिकों की स्वयंकर्तृत्व की दिव्य शक्ति जाग्रत और संघटित करके, उसे एक क्रांतिकारी सामाजिक मूल्य बनाने का प्रयास है। अतएव इस प्रक्रिया में मनुष्य=साधन+साध्य। मतलब यह कि क्रांति की प्रक्रिया के साथ ही शासनमुक्त समाज के निर्माण का रचनात्मक-कार्य शुरू हो जाता है।

६. अहिंसा की प्रत्यक्ष प्रेरणा

अहिंसा को जीवन का निरपेक्ष और शाश्वत मूल्य माना है। इसलिए क्रान्तिकारी व्यक्ति हिंसापराङ्मुख बनता है। उसे अहिंसाप्रवण बनने के लिए प्रेरणा मिलती है।

७. ग़रीबी और अमीरी देवनिर्मित या दैवनिर्मित नहीं है। और न वह अनिवार्य नैसर्गिक नियम ही है। आर्थिक विषमता मानवकृत है।

८. व्यक्तिगत संग्रहलोलुपता और आर्थिक प्रभुत्व की आकांक्षा से आर्थिक विषमता पैदा होती है।

९. संग्रह-लोलुपता और स्वामित्वाकांक्षा मनुष्य का स्वभावगुण नहीं है। वह विकार है। इसलिए उसका निराकरण सृष्टिनियम के अनुसार तथा ऐतिहासिक क्रम-विकास के अनुसार भी अवश्यम्भावी और इष्ट है।

साम्यवाद

१०. सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक बुराइयों की जड़ उत्पादन के साधन तथा पद्धति में है। दूसरे शब्दों में आर्थिक विषमता ही सारे सामाजिक अनर्थों का मूल है।

११. आर्थिक विषमता का निराकरण करते ही सारी बुराइयाँ अपने आप हट जायँगी।

१२. समाज की राज्यव्यवस्था और संस्कृति उसकी आर्थिक व्यवस्था से निर्धारित होती है। अर्थात् समाज की राजनीति और संस्कृति उसकी अर्थरचना का प्रतिबिम्ब है।

१३. व्यक्तिगत मालकियत और मिलकियत का निराकरण करना आवश्यक है।

१४. पहले क़दम के तौर पर व्यक्तिगत मालकियत की जगह राज्य की मालकियत कायम करनी चाहिए और राज्य-संस्था पूर्णरूप से श्रमजीवियों के कब्जे में होनी चाहिए। 'राज्यीकरण' (State-ownership) 'समाजीकरण' (Communization) का पहला क़दम है।

सा म्य यो ग

१०. सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक बुराइयों का आर्थिक विषमता के साथ अभेद्य सम्बन्ध है। जीविका के साधन से जीवन की पद्धति अवश्य निर्धारित होती है। परन्तु सारे अनर्थों का एकमात्र कारण आर्थिक विषमता ही नहीं है।

११. सामाजिक दोषों के निराकरण में आर्थिक विषमता के निराकरण से मौलिक मदद मिलती है।

१२. आर्थिक व्यवस्था में समाज की सभ्यता अभिव्यक्त होती है। आर्थिक व्यवस्था के अनुरूप राज्यतंत्र बनता है। अर्थरचना और राज्य-तंत्र दोनों के संस्कार समाजनीति पर होते हैं।

१३. व्यक्तिगत मालकियत और मिलकियत के निराकरण के साथ-साथ स्वामित्व और सम्पत्ति की भावना का ही निराकरण करना है।

१४. अगर व्यक्तिगत मालकियत निषिद्ध है, तो सामुदायिक मालकियत भी निषिद्ध ही है। मालकियत की भावना का निराकरण हमारा इष्ट होना चाहिए। इसलिए मालकियत न तो एक व्यक्ति की होगी और न व्यक्तियों के समूह की। समाजरूपी परमात्मा ही सारी सम्पत्ति का मालिक माना जाना चाहिए। व्यक्तियों की अहंता का जोड़ परमात्मा नहीं है।

सा म्य वा द

१५. श्रमिकों की सरकार की मालकियत ही वास्तव में श्रमिकों की मालकियत है।

१६. वर्ग-संघर्ष

श्रमिकों की सरकार कायम करने के लिए पूँजीपतियों से जबरदस्ती सत्ता छीननी होगी; और, आवश्यक हो तो, उनका वध भी किया जाय।

१७. सम्पत्ति और उत्पादन के केन्द्रीकरण से एक पक्ष की अधिसत्ता का निर्माण। शासन की अनिवार्यता बढ़ती ही जाती है।

१८. राष्ट्रवादी मनोवृत्ति पुष्ट होती है, क्योंकि हरएक देश के श्रमिक पहले अपने देश की राज्यसत्ता पर कब्जा जमाने की कोशिश करते हैं। आज तो कम्युनिज्म में से अन्तर्-राष्ट्रीयता का आग्रह लगभग तिरोहित हो गया है।

१९. श्रमिकों के संगठन के लिए क्रांतिकाल में केन्द्रित उत्पादन आवश्यक। अतः साम्यवादी अधिराज्य में भी केन्द्रित उत्पादन का आग्रह और विकास। अर्थात् पूँजीवादी केन्द्रित उत्पादन का ज्यों का त्यों स्वीकार। उत्पादन और वितरण का सम्पूर्ण केन्द्रीकरण।

सा म्य यो ग

१५. श्रमिकों के स्वयंनिर्वाचित प्रतिनिधियों की मालकियत को श्रमिकों की मालकियत समझना बहुत बड़ा भ्रम है। किसी एक वर्ग की या सरकार की मालकियत न तो समाज की मालकियत कही जा सकती है और न लोकात्मा, ईश्वर की।

१६. वर्ग-परिवर्तन
सभी व्यक्तियों को उत्पादक बनना है। पूँजीपतियों को भी श्रमिक बनना है।

१७. सम्पत्ति और उत्पादन के विकेंद्रीकरण के फलस्वरूप राज्यसत्ता का विकेंद्रीकरण। शासन की आवश्यकता उत्तरोत्तर कम होती जाती है। क्रांति की प्रक्रिया में ही शासन के विघटन की अप्रत्यक्ष प्रक्रिया अंतर्भूत है। पक्षातीत शासन-पद्धति की स्थापना अपने आप होती है।

१८. सर्वभूतहितरत वृत्ति का बीजारोपण होता है। राज्य की सीमाओं को पार करने की सुमधुर प्रक्रिया का सहज-भाव से आरम्भ होता है।

१९. क्रान्ति की प्रक्रिया में बाह्य संगठन को ही सब कुछ नहीं माना है। श्रमिकों के हृदय एक-दूसरे के साथ जोड़ने का आग्रह है। इसलिए क्रान्ति की प्रक्रिया में ही विकेन्द्रीकरण की तरफ क़दम बढ़ता जाता है। वर्गनिराकरण के बाद उत्पादन और वितरण अधिकतर विकेन्द्रित पद्धति से ही होगा। बहुत थोड़े अंश में उत्पादन के साधनों के लिए केन्द्रीकरण आवश्यक माना जायेगा।

सा म्य वा द

२०. वस्तु-निष्ठ

आर्थिक संयोजन का उद्देश्य अधिक उत्पादन और सुलभ वितरण है। केन्द्रीय मूल्य उपभोग्य वस्तु।

२१. उपभोग की वस्तुओं की प्रचुरता और समान वितरण ही परम साध्य है। वही सांस्कृतिक उन्नति का प्रधान लक्षण है। फलस्वरूप मनुष्य और पशु दोनों उत्पादन के साधन बन जाते हैं। यंत्र प्रधान होता है। मानव और मानवेतर प्राणी गौण साधन बन जाता है।

२२. काल को संहारक तत्त्व मानकर उसके साथ निरतंर होड़। उत्पादन की गति बढ़ाने का और समय बचाने का खब्त।

२३. केन्द्रित उत्पादन और वितरण के लिए विशेषज्ञों तथा व्यवस्थापकों की अनिवार्यता। इसमें से मुनीमशाही और विशेषज्ञसत्ता का आविर्भाव।

२४. चाहे सामुदायिक स्वामित्व ही क्यों न हो, अर्थ-नीति का लक्ष्य प्रभूत भोग सामग्री और वैभवविलास। सामुदायिक परिग्रह का संयोजन। वासनाओं और आवश्यकताओं को प्रोत्साहन।

साम्य योग

२०. मानव-निष्ठ

आर्थिक संयोजन का उद्देश्य उत्पादक की शक्ति तथा कुशलता के उपयोग द्वारा उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण उत्कर्ष है। केन्द्रीय मूल्य उत्पादक, मानव।

२१. उत्पादन का उद्देश्य उत्पादक का सांस्कृतिक विकास है। जीवन की आवश्यक सामग्री का उत्पादन करने में मनुष्य की और पशु की सम्पूर्ण शक्ति का उपयोग तथा विकास होना चाहिए। उत्पादन मनुष्य के लिए है, मनुष्य उत्पादन के लिए नहीं।

२२. काल को आयु का उपादान तथा जीवन का पोषक तत्त्व मानकर उसका सहयोग प्राप्त करने का प्रयास। समयज्ञता और प्रत्युत्पन्न मति।

२३. विकेन्द्रित उत्पादन में उत्पादक का परिवर्तन विशेषज्ञ में निरन्तर होता है। छोटे पैमाने पर उत्पादन में उत्पादक ही व्यवस्थापक हो जाता है।

२४. त्याग और सन्तोष की भावनाका विकास अर्थ-नीति का लक्ष्य। अपरिग्रह के सिद्धान्त का आर्थिक क्षेत्र में विनियोग। आत्मतुष्टि तथा दूसरों के साथ तादात्म्य में परिपाक।

सर्वोदय-स्वाध्याय-योजना

कार्यकर्ताओं, जिज्ञासुओं और जनता में सर्वोदय-विचार के प्रचार की दृष्टि से 'सर्वोदय-स्वाध्याय-योजना' शुरू की गयी है, जिसके अनुसार लोगों को कम से कम मूल्य में स्वाध्याय योग्य उत्तम नवीनतम साहित्य नियमित रूप से मिलता रहे। योजनाकी संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है—

१. सभासद—संस्था या व्यक्ति हर कोई सभासद बन सकेगा।

२. शुल्क—इसका वार्षिक शुल्क दस रुपये है।

३. सुविधाएँ—(अ) वर्ष भर तक भूदान-यज्ञ, गया (हिन्दी) या उसके बदले भूदान संबंधी विभिन्न प्रांतों से निकलनेवाले साप्ताहिकों या पाक्षिकों में से एक भाषा का एक पत्र दिया जा सकेगा, जिसका शुल्क प्रायः तीन रुपया हो।

(आ) लगभग २५०० पृष्ठों का क्राउन साइज का नवीनतम साहित्य मिलेगा।

४. योजना का वर्ष—योजना का वर्ष १ जनवरी से ३१ दिसंबर तक माना गया है। सदस्य चाहे जब बन सकते हैं। साहित्य सब सदस्यों को समान रूप से दिया जायगा। भूदान पत्रिका सदस्य बनने के माह से वर्ष भर चालू रहेगी।

संचालक,
सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
राजघाट, काशी (बनारस)

हमारे प्रकाशन

भूदान-दीपिका

(विमला)

प्रस्तुत पुस्तिका में विद्वान् लेखिका ने भूदान-आन्दोलन की सांस्कृतिक और राजनैतिक पृष्ठ-भूमि के आधार पर अपने अनुभव दिये हैं। विवेचन हृदयग्राही है। पृष्ठ ३२, दाम : दो आना।

साहित्यिकों से

(विनोबा)

इस पुस्तिका में विनोबा जी के समय-समय पर साहित्यिकों के बीच हुए सात प्रवचनों का संकलन है। साहित्य और साहित्यकारों के चिरंतन सत्यं-शिवं-सुन्दरं का दर्शन।

दाम : आठ आने।

भगवान् के दरबार में !

(विनोबा)

इस पुस्तिका में विनोबा जी के पुरी में किये गये उन तीन प्रवचनों का संकलन है, जो भगवान् जगन्नाथ के बिना दर्शन के लौट जाने पर दिये गये थे। इनमें भारतीय धर्मों के विकास, समन्वय और उपासना-पद्धतियों पर ऐतिहासिक तथा सामाजिक दृष्टि से विनोबाजी ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। पुरी-मन्दिर से लौटते समय का एक चित्र भी दिया गया है। पृष्ठ २०, दाम : दो आना।

ग्रामराज

(धीरेन भाई)

विषय नाम से स्पष्ट है। ग्रामराज का मतलब है, ग्राम-स्वावलंबन। इस दृष्टि से इसमें विधायक मार्गदर्शन मिलेगा।

दाम : चार आने।

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

राजघाट, काशी

मुद्रक हिन्द ... प्रेस, ..., बनारस